



**1<sup>st</sup> - ग्रेड**

←————→  
**स्कूल व्याख्याता**

**भूगोल**

**राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)**

**पेपर - 2 || भाग - 6**

**भारत एवं राजस्थान का भूगोल**



# विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	भारत में कृषि वानिकी	1
2	हरित क्रांति (Green Revolution)	4
3	प्राकृतिक वनस्पति	8
4	भारत की मृदा	31
5	भारत की जनसंख्या	52
6	प्राकृतिक संसाधन	64
7	पेट्रोलियम	97
8	लौह इस्पात उद्योग	111
9	भारत के आर्थिक प्रदेश	129
10	पर्यावरणीय आपदा	139
11	भारत के संदर्भ में प्रादेशिक नियोजन	163
12	राजस्थान का सामान्य परिचय	165
13	राजस्थान का भौतिकीय स्वरूप	169
14	नवीनतम संभाग एवं जिला परिदृश्य	172
15	राजस्थान का भौगोलिक विभाजन प्रदेश	189
16	जलवायु	200
17	मृदा	211
18	खनिज तत्व	215
19	कृषि	232
20	प्रमुख सिंचाई परियोजना एवं जल संरक्षण तकनीकें	240
21	राजस्थान में वनस्पति (वन)	255
22	जनसंख्या 2011	260
23	उद्योग	265

# विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	जल संसाधन	289



## भारत में कृषि वानिकी

( Agroforestry in India )

- कृषि वानिकी से अर्थ फसलों की कृषि के साथ वानिकी अर्थात् वृक्षों का पालन करने से है।
- फसल उत्पादन प्रक्रिया के साथ खेतों की मेड़ पर या फसलों के बीज कुछ दूरी पर कतारबद्ध वृक्षारोपण किया जा सकता है।
- इसके विविध रूप हो सकते हैं जैसे :-
- (1) फार्म वानिकी :- फसलों के साथ वृक्षारोपण
- (2) चारागाह वानिकी :- पशुचारण वाले क्षेत्रों में चारागाहों में वृक्षारोपण
- (3) मिश्रित कृषि वानिकी :- फसल उत्पादन व पशुपालन के साथ वृक्षारोपण
- (4) बागवानी कृषि वानिकी :- बागवानी फसलों जैसे : सब्जी आदि के साथ वृक्षारोपण।
- (5) मत्स्य कृषि वानिकी :- मछली पालन हेतु बनाये गये तालाबों के किनारे वृक्षारोपण।
- (6) पक्षेप वानिकी :-
  - ↳ डेयरी, मधुमक्खी पालन, रेशम कीट पालन आदि के साथ वृक्षों का उत्पादन
  - ↳ वैश्विक स्तर पर कृषि वानिकी की शुरुआत म्यांमार से है। जहाँ टोउया नामक स्थानान्तरित कृषि के रूप वृक्षारोपण की शुरुआत हुई।
  - ↳ इस कृषि प्रारूप में वृक्षों को लगाकर वहाँ कुछ समय तक फसलों की कृषि की जाती थी एवं वृक्ष बड़े हो जाते थे तो दूसरे क्षेत्र में वृक्ष लगाकर फसल उत्पादन शुरू कर दिया जाता था अर्थात् इसका उद्देश्य फसलों की कृषि के बहाने वृक्षों का विकास करना था।
  - ↳ वैश्विक स्तर पर कृषि वानिकी का उद्देश्य अधिक से अधिक क्षेत्र पर वृक्षों का विकास कर पर्यावरण संरक्षण करना है।

↳ वैश्विक स्तर पर नैरोबी (केन्या) में 1978 में International Center For Research in Agroforestry (ICRAF) स्थापित किया गया है।

↳ भारत में 1988 में झाँसी (UP) में National Research Center for Agroforestry की स्थापना की गई थी। जिसे 2014 के बाद Central Agroforestry Research Institute (CAFRI) के नाम से जाना जाता है।

↳ भारत में वनों के विकास हेतु पहली वन नीति आजादी के बाद 1952 में घोषित की गई थी। जिसमें 1988 में संशोधन किया गया इस नीति के तहत समस्त भौगोलिक क्षेत्रफल के एक तिहाई भाग पर वनों का विकास करने का लक्ष्य रखा गया, परन्तु यह अभी तक संभव नहीं हुआ है। अतः कृषि वानिकी के माध्यम से वन क्षेत्र का विकास करने की कोशिश की जा रही है इस हेतु भारत ने 2014 में अलग से कृषि वानिकी नीति घोषित की है तथा भारत दुनिया का पहला देश है जिसने अलग से कृषि वानिकी नीति घोषित की है

### भारत में कृषि वानिकी की संभावनाएँ एवं इसके लाभ :-

- (1) भारत में बड़े पैमाने पर व्यर्थ भूमि के रूप में खेती के सीमाओं के सहारे खाली जमीन पड़ी है जिस पर वृक्षों का विकास कर संसाधन का पर्याप्त उपभोग हो सकता है।
- (2) इस पणाली में रोजगार सृजन की अपार क्षमता है।
- (3) इसके माध्यम से कुटीर उद्योगों को विभिन्न कच्चा माल जैसे लकड़ी, रेशा, गोंद आदि उपलब्ध करवाये जा रहे हैं।
- (4) यह पणाली पारिस्थितिकीय संतुलन स्थापित करने में सहयोग करती है।
- (5) इसके माध्यम से मृदा संरक्षण व जल संरक्षण किया जा सकता है।
- (6) भारत में फसल कृषि मौसमी आपदाओं से अत्यधिक प्रभावित है जैसे अकाल, बाढ़, सूखा, चक्रवात आदि।

अतः कृषि वानिकी किसानों के लिए आय का दूसरा विकल्प है अर्थात् आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है।

→ CAFRI के अनुसार अभी तक भारत का 25 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र कृषि वानिकी के अन्तर्गत है तथा 2050 तक 28 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र इसके अन्तर्गत और लाने की योजना है अतः 2050 तक कुल 53 Million हेक्टेयर क्षेत्र पर कृषि वानिकी के अन्तर्गत आ जायेगा जो कुल क्षेत्रफल का लगभग 17.5% होगा।

↳ कृषि वानिकी के अन्तर्गत भारत में बृहत् स्तर पर पोपलर (पहाड़ी पीपल) यूकेलिप्टस, कश्म आदि के वृक्ष उगाये जा रहे हैं।

↳ पोपलर भारत की अधिकांश प्लाइवुड, खेल सामग्री, माचिस उद्योग आदि के लिए कच्चे माल का स्रोत है।

↳ अतः कृषि वानिकी रोजगार सृजन, औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।



toppernotes  
Unleash the topper in you

## 2 अध्याय

# हरित क्रान्ति (Green Revolution)



### हरित क्रान्ति (Green Revolution)

- ↳ हरित क्रान्ति का अर्थ खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में तीव्र गति से आये परिवर्तनों से है।
- ↳ इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग "विलियम गैड" द्वारा किया गया था।
- ↳ 1950 के दशक में रॉकफेलर संस्थान तथा फोर्ड फाउण्डेशन के संचालन में 'मैक्सिको' में गेहूँ की बोनी किस्म का विकास जो परम्परागत किस्मों की तुलना में अधिक उत्पादन देने वाली थी
- ↳ इसके कारण गेहूँ के उत्पादन में तीव्र गति से परिवर्तन आया तथा इस कार्यक्रम के निर्देशक 'नार्मन बोरलोग' को '1970' में शान्ति का नोबेल पुरस्कार दिया गया था, बोरलोग को वैश्विक स्तर पर 'हरित क्रान्ति का जनक' कहा जाता है।
- ↳ 1960 के दशक में रॉकफेलर संस्थान तथा फोर्ड फाउण्डेशन द्वारा स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, मनीला में इण्डोनेशिया तथा ताइवान की चावल की किस्मों के संकरण से एक नई किस्म IR8 विकसित की गई।
- ↳ जिसके कारण चावल उत्पादन में तीव्र गति से आमूलचूल परिवर्तन आया इसलिए IR8 को चमत्कारी चावल (Miracle Rice) कहा जाता है।
- ↳ इस दौरान उत्तरी अमेरिका से लेकर दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों में खाद्यान्नों के उत्पादन में तीव्र गति से परिवर्तन आया अर्थात् भारत सहित इन देशों में हरित क्रान्ति का प्रभाव आया।

### • भारत में हरित क्रान्ति :-

- ↳ भारत में खाद्यान्नों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए 1960-61 में सघन कृषि विकास कार्यक्रम (Intensive Agriculture Development Program - IADP) शुरू किया गया।
- ↳ जिसे पैकेज प्रोग्राम के नाम से भी जाना जाता है।
- ↳ यह कार्यक्रम प्रारम्भिक चरण में देश के 3 राज्यों के 3 जिलों में शुरू किया गया जो निम्न हैं :-

- (1) शाहबाद (बिहार)
- (2) अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)
- (3) लुधियाना (पंजाब)
- (4) पाली (राजस्थान)
- (5) रायपुर (मध्य प्रदेश)
- (6) पश्चिमी गोदावरी (आंध्र प्रदेश)
- (7) तंजौर (तमिलनाडू)

↳ यह कार्यक्रम 1964-65 तक अत्यधिक लोकप्रिय हुआ तथा इसके अन्तर्गत देश के 114 जिले शामिल हो गये। इस सघन कृषि जिला कार्यक्रम को 1964-65 में सघन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम के रूप में परिवर्तित कर दिया गया जिसके अन्तर्गत देश की लगभग 29% कृषि भूमि शामिल थी।

↳ भारत में हरित क्रांति के रूप में प्रारम्भिक प्रयास 1960 के लगभग बाजरा व अन्य मोटे अनाजों के संकरण के रूप में शुरू किया गया था।

↳ 1963-64 में मैक्सिको की गेहूँ को भारत के चयनित क्षेत्रों में उगाया गया इन उन्नत किस्मों से उत्पादन में लगभग 3-4 गुणा की वृद्धि हुई।

↳ 1965 में भयंकर सूखे की स्थिति के कारण बड़े पैमाने पर संपुंक्त राज्य अमेरिका से खाद्यान्नों का आयात किया गया।

↳ 1966 में बड़े पैमाने पर चावल व गेहूँ की उन्नत किस्मों को मँगवाकर कर भारत में बुवाई की तथा उच्च उत्पादक किस्म कार्यक्रम शुरू किया गया। भारत में IR5, IR22, IR24 जैसी किस्मों का विकास किया गया।

↳ इस उच्च उत्पादक किस्म कार्यक्रम (HYVP - High Yield Variety Programme) का परिणाम भारत में कुछ ही वर्षों में खाद्यान्नों के उत्पादन में तीव्र वृद्धि वाला था जिसे भारत में हरित क्रांति के नाम से जाना जाता है।

↳ भारत में उच्च उत्पादक किस्म कार्यक्रम के प्रमुख सूत्रधार "M.S. स्वामीनाथन" थे जिन्हें भारत में "हरित क्रांति का जनक" कहा जाता है।



↳ हरित क्रांति के कारण पारम्परिक में गेहूँ व चावल के उत्पादन में तीव्र परिवर्तन आया तथा चावल परम्परागत उत्पादन क्षेत्रों दक्षिण भारत से उत्तर भारत की ओर प्रसारित हुआ तथा गेहूँ का दक्षिण की ओर प्रसार हुआ।

↳ वर्तमान में अधिकांश फसलें इसके दायरे में आ चुकी हैं।  
2004 के पश्चात्, भारत में द्वितीय हरित क्रांति की शुरुआत हुई है।

### • हरित क्रांति के घटक (Components of Green Revolution) :-

↳ हरित क्रांति केवल उन्नत किस्मों के प्रयोग से ही नहीं आयी बल्कि उत्पादन बढ़ाने के कई उपाय किये गये थे जिन्हें हरित क्रांति के घटकों के रूप में जाना जाता है।

- (i) उन्नत बीजों का प्रयोग।
- (ii) रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग।
- (iii) कीटनाशक व खरपतवार नाशकों का प्रयोग।
- (iv) सिंचाई हेतु नदी घाटी परियोजनाओं, बाँधों, नहरों आदि का निर्माण।
- (v) कुओं का विद्युतीकरण।
- (vi) कृषि में मशीनों का प्रयोग।
- (vii) कृषि मण्डलों की स्थापना।
- (viii) परिवहन के साधनों व सड़कों का विकास।
- (ix) भण्डार गृहों का निर्माण।
- (x) कृषि विश्वविद्यालयों व अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना।
- (xi) कृषि जागरूकता के कार्यक्रम।

### • हरित क्रांति के परिणाम :-

#### I सकारात्मक परिणाम :-

- (i) खाद्यान्न उत्पादन में आत्म-निर्भरता।
- (ii) सामाजिक स्तर व जीवन स्तर में सुधार।
- (iii) आर्थिक स्तर में सुधार।

- (iv) कृषि आधारित उद्योगों का विकास ।
- (v) चिकित्सा, शिक्षा आदि सुविधाओं का विकास
- (vi) मशीनों के कारण कृषि कार्य में आसानी
- (vii) कुशल क्रमिक हेतु रोजगार के अवसरों में वृद्धि ।

### ॥ नकारात्मक परिणाम :-

- (i) मृदा की उर्वरता का ह्रास ।
- (ii) भू-जल स्तर में गिरावट ।
- (iii) नहरी क्षेत्रों में अति सिंचाई से खेती की समस्या ।
- (iv) जैव विविधता का ह्रास ।
- (v) पारिस्थितिकीय असंतुलन उत्पन्न होना ।
- (vi) मानव स्वास्थ्य पर कुपुभाव ।
- (vii) अकुशल क्रमिक में बेरोजगारी उत्पन्न होना ।
- (viii) गेहूँ व चावल को महत्व मिला तथा अन्य फसलों की अपेक्षा की गई ।
- (ix) क्षेत्रीय असमानता का उत्पन्न होना ।
- (x) समाज में आर्थिक असमानता उत्पन्न होना ।
- (xi) आर्थिक असमानता से चोरी, डकैती, लूटपात जैसे अपराधों में वृद्धि ।
- (xii) कर्ज के कारण किसानों द्वारा आत्महत्या में वृद्धि ।



### प्राकृतिक वनस्पति

# प्राकृतिक रूप से या बिना मानवीय हस्तक्षेप के उगने वाले पौधों व घास को प्राकृतिक वनस्पति कहा जाता है।

भारत में वर्तमान वनस्पति का एक लम्बा इतिहास है भारत में हिमालय क्षेत्र तथा प्रायद्वीपीय भारत स्थानीय वनस्पति से आच्छादित है। जबकि गंगा के मैदान व थार मरुस्थल में विदेशी वनस्पति दिखाई देती है। जिसका स्थानान्तरण हिमालय पार से हुआ है। मुख्य रूप से चीन व तिब्बत से इस वनस्पति को बोरियस वर्ग में रखा जाता है।

• उत्तरी अफ्रीका से आने वाले पौधों ने शुष्क व अर्धशुष्क क्षेत्रीय वनस्पति को प्रभावित किया है।

जैसे :- थार, उत्तरी भारत के मैदान

• इंडो मलेशिया से आने वाली वनस्पति का प्रभाव उत्तर पूर्वी पहाड़ी वनस्पति पर पड़ा है।

# विदेशों से लार्स गई लेनटैन तथा वाटर हायसिन्थ को उद्यान सजावट के लिए लाया गया था। लेकिन अब यह वनस्पति लेनटैन - गोचर भूमि तथा जंगलों में फैल गयी है।

वाटर हायसिन्थ ने नदियों, तालाबों, झीलों को रुद्ध कर दिया है। इस वनस्पति को बंगाल का आँकड़ कहा जाता है।

## भारत में वनों का स्थानिक वितरण

# भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 328,7263 वर्ग km है। जिसमें से लगभग 7,94,200 वर्ग km (24.16%) वनों के अन्तर्गत आता है।

# राष्ट्रीय वन नीति 1952 के अनुसार कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 33% भाग वनों के अन्तर्गत आना चाहिए।

# भारत का वन प्रदेश विश्व वन प्रदेश के औसत (34.5) से बहुत कम है।

# विश्व में सर्वाधिक वन % वाले देश :-

- (1) स्वीडन - 58%
- (2) ब्राजील - 57%
- (3) संयुक्त राज्य अमेरिका - 42%
- (4) जर्मनी - 41%
- (5) कनाडा - 36%

- भारत में प्रति व्यक्ति वन प्रदेश मात्र 0.08 हेक्टेयर है। जो विश्व में प्रति व्यक्ति वन प्रदेश 1.10 हेक्टेयर से कम है। कनाडा में प्रति व्यक्ति वन प्रदेश 23 हेक्टेयर है। ब्राजील में 8.6 हेक्टेयर, आस्ट्रेलिया में 5 हेक्टेयर, स्वीडन में 4 हेक्टेयर है।

## भारत में वनों का स्थानिक वितरण

# कुल क्षेत्रफल :- 3287263 वर्ग Km.

794200 वर्ग Km / 24.16% वनों के अन्तर्गत है, लेकिन कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 33% भाग वनों के अन्तर्गत आना चाहिए।

(राष्ट्रीय वन नीति 1952 के अनुसार)

# मुख्य वन क्षेत्र :-

- हिमाचल
- भाबर
- तराई
- पश्चिम-पूर्वी घाट
- बुंदेलखण्ड, बघेलखण्ड, छोटा नागपुर, नीलगिरी

# विश्व के वन प्रदेशों का औसत 34.5% है। जबकि भारत के वन प्रदेशों का औसत 24.16% है।

- स्वीडन - 58%
- ब्राजील - 57%
- U.S.A - 42%
- जर्मनी - 41%

• भारत में प्रति व्यक्ति वन प्रदेश - 0.08% हेक्टेयर

विश्व औसत - 1.10 हेक्टेयर

कुनाडा में - 23 हेक्टेयर (सर्वाधिक)

ब्राजील - 0.6 हेक्टेयर (सर्वाधिक)

ऑस्ट्रेलिया - 5 हेक्टेयर

- प्रायद्वीपीय भारत के अंतर्गत सर्वाधिक वन क्षेत्र आता है, जो भारत के कुल वन प्रदेश का 57% है।

- हिमालय दूसरे स्थान पर - 18%.
- पश्चिमी घाट तीसरे स्थान पर - 10%.
- गंगा-यमुना मैदान चौथे स्थान पर - 5%.

ISFR: -

- 2019 की रिपोर्ट

- कुल क्षेत्र : 7,12,249 वर्ग Km

↓

- कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 21.67% (केवल वन)

- वन + वृक्ष → 24.56%

# M.P में सर्वाधिक वन आवरण क्षेत्र :-

- अरुणाचल प्रदेश

- छत्तीसगढ़

# कुल भौगोलिक क्षेत्र का % वनावरण (सर्वाधिक)

(1) मिजोरम - 85.41%

(2) अरुणाचल प्रदेश - 79.63%

(3) मेघालय - 76.33%

कम :-

हरियाणा - 3.62%

पंजाब - 3.67%

राजस्थान - 4.86%

# सर्वाधिक वन वृद्धि :- कर्नाटक

- आन्ध्र प्रदेश
- केरल
- उड़ीसा
- तेलंगाना

# 15 राज्यों व केन्द्रशासित क्षेत्रों में 33% से अधिक वन आवरण है।



Toppernotes  
Unleash the topper in you

## वनो का वर्गीकरण

प्रशासन के आधार पर	स्वविधान के आधार पर	व्यापारिक आधार पर	गहन या स्तरचना के आधार पर	उपयोगिता के आधार पर	औसत वार्षिक वनत्व के आधार पर
<p>1</p> <p>आरक्षित वन :- पुन्यक्षेत्रकार के नियंत्रण में रहने, एकत्रित करने के लिए वर्जित वन कुल वन क्षेत्रफल का 53% आग।</p> <p>रक्षित वन :- सरकार की देख-रेख में रहते हैं। स्थानीय लोगों को तकड़ी टकन करने व मवेशियों को चराने की छूट 29% आग।</p> <p>अवर्जित वन :- तकड़ी करने व मवेशियों के चराने पर प्रतिबंध नहीं है। 18% आग।</p>	<p>राज्य वन :- राज्य केन्द्र के पूर्ण नियंत्रण में</p> <p>(1) पूर्ण नियंत्रण में</p> <p>(2) राज्यी महत्वपूर्ण वन क्षेत्र</p> <p>(3) 94% वन प्रदेश इसमें अन्तर्गत आता है।</p> <p>वाणिज्य वन :- वनों का श्वामित्व प्रशासन स्थानीय निवासियों (नगर निगम नगर बोर्ड, जिला बोर्ड ग्रामीण, पंचायत) 5% वन क्षेत्र आता है।</p> <p>निजी वन :- वनों का स्वामित्व निजी हाथों में होता है। 1% हिस्सा आता है।</p>	<p>विपण्य :- ये वन अभिजात्य वन होते हैं। ये देश का लगभग 82% वन प्रदेश आता है।</p> <p>अविपण्य :- ये वन अभिजात्य वन नहीं होते हैं। तथा ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में होते हैं।</p> <p>18% आग आता है</p> <p>कोणधारी वन आते हैं।</p>	<p>पर्यो की किस्मों के आधार पर दो प्रकार के होते हैं</p> <p>कोणधारी</p> <p>शीतोष्ण वन 6.5% आग पर</p> <p>सौंदर्य परिलंबित</p> <p>उष्ण कटि</p> <p>मानसुनी वन होते हैं</p> <p>94% आग आता है।</p>	<p>उपयोगिता के आधार पर</p> <p>उपयोगिता वन</p> <p>58% वन प्रदेश आते हैं।</p> <p>श्वामित्व</p> <p>उपयोगिता वन 22%</p> <p>रक्षित</p> <p>50-100</p> <p>शुद्ध</p> <p>रेगिस्तान 50-</p> <p>बहुल शुद्ध</p>	<p>श्वामित्व</p> <p>200+</p> <p>आर्द्र</p> <p>मानसुन</p> <p>100-200</p> <p>अर्द्ध आर्द्र</p> <p>रक्षित</p> <p>50-100</p> <p>शुद्ध</p> <p>रेगिस्तान 50-</p> <p>बहुल शुद्ध</p>



## वनो का वर्गीकरण

### प्रशासन के आधार पर :-

#### (A) आरक्षित वन :-

- ये वन सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रहते हैं। यहाँ पर पशु चराने व लकड़ी एकत्र करने पर पूर्ण प्रतिबंध होता है। देश के कुल वन क्षेत्र का 53% इस वर्ग में आता है।

#### (B) संरक्षित वन :-

- ये वन सरकार की देख रेख में रहते हैं लेकिन स्थानीय लोगों को लकड़ी एकत्र करने व पशु चराने की अनुमति होती है। देश के कुल वन क्षेत्र का 29% इस वर्ग के अन्तर्गत आता है।

#### (C) अवर्गीकृत वन :-

- इस प्रकार के वनों में लकड़ी काटने व पशु चराने पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है। देश के कुल वन क्षेत्र का 18% भाग इस वर्ग के अन्तर्गत आता है।

### (2) भारतीय संविधान के अनुसार वर्गीकरण :-

#### (A) राज्य वन :- (State forests)

- ये वन सरकार के पूर्ण नियंत्रण में होते हैं। इसमें भारत के सभी महत्वपूर्ण वन आते हैं। देश का लगभग 94% भाग इस वन प्रदेश के अन्तर्गत आता है।

#### (B) वाणिज्य वन :-

- इन वनों का स्वामित्व तथा प्रशासन स्थानीय निकायों (नगर - निगम बोर्ड, शहरी प्रदेश जिला बोर्ड, ग्रामीण

पंचायत) के अधीन होता है। देश का लगभग 5% वन प्रदेश इस वर्ग के अन्दर आता है।

(C) निजी वन :- इन वनों का स्वामित्व निजी हाथों में होता है, इसमें देश के कुल वन प्रदेश का 1% से अधिक हिस्सा आता है।

(3) व्यापारिक आधार पर वर्गीकरण :-

(A) विपण्य वन Merchantable :- ये वन अभिगम्य वन होते हैं, देश का लगभग 82% वन प्रदेश इस वर्ग के अन्तर्गत आता है।

(B) अविपण्य वन (Non Merchantable) :- ये वन अभिगम्य वन नहीं होते हैं व ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों, दलदली क्षेत्रों में होते हैं। देश का लगभग 18% वन इस वर्ग के अन्तर्गत आता है।

(4) गठन व संरचना के आधार पर :-

(1) कोणधारी वन :- कोणधारी वनों का मुख्य क्षेत्र शीतोष्ण कटिबंध होता है जो मुख्य रूप से हिमालय 65% वन प्रदेश पर पाये जाते हैं।

(2) चौड़े पत्तों वाले वन :-

- ये वन मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय व शीतोष्ण मानसून वन होते हैं, जो पठारी, मैदानी क्षेत्रों में मुख्य रूप से पाये जाते हैं जो देश का लगभग 94% वन प्रदेश इस वर्ग के अन्तर्गत आता है।

## वनस्पति

- प्राकृतिक वनस्पति से ताप्य वृक्षों, झाड़ियों, घास, बेलों, लताओं आदि के विभिन्न समूह से हैं जो एक निश्चित पर्यावरण में पायी जाती हैं।
- किसी स्थान या प्रदेश में जलवायु की दशाओं के अनुसार अपने आप उत्पन्न होने वाली वनस्पति को प्राकृतिक वनस्पति कहा जाता है।

# प्राकृतिक वनस्पति को प्रभावित करने वाले कारक :-

- तापमान
- वर्षा
- मृदा
- आर्द्रता की मात्रा

# भारतीय प्राकृतिक वनस्पति की सर्वप्रथम वर्गीकरण ने 116 प्रकार में बाँटा जिसे आगे चतुर् पुरी ने संशोधित करते हुए 16 प्रकारों में विश्राजित किया

### वनस्पति का वितरण तथा प्रकार

क्षैतिज वितरण

उच्चधर वितरण

[1] उष्ण कटिबंधीय अदाबहार वनस्पति :-

- उष्ण कटिबंधीय आर्द्र अदापर्णी वनस्पति

वार्षिक वर्षा - 2500 mm

वार्षिक तापमान - 22°C

आर्द्रता - 75.807.